om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 10

स्मृति दिवस–न्यारे व प्यारे बनने का प्रेरक

ब्र.कु.सूरजकुमार, माउण्ट आबू

भगवान को पाकर भी भला कोई क्यों मग्न नहीं होगा। यज्ञ-पिता प्रजापिता ब्रह्मा ने भगवान को पाया ही नहीं, वरन् उनको अपने में समा लिया, अपना तन ही परमपिता को दे दिया। और स्वयं मस्त हो गए प्रभु की मस्ती में। जिनका प्रथम आदर्श बना–कर्मों में न्यारापन, देह से न्यारापन... वे इस देह में रहते हुए भी जैसे कि इसमें नहीं रहते थे। देखने वालों को अनेक बार उनकी साकार देह दिखाई भी नहीं देती थी। और यह न्यारापन ही उन्हें सम्पूर्ण विश्व का प्यारा पिता बना सका।

ईश्वरीय ज्ञान का लक्षण ही है न्यारापन अर्थात् अलौकिकता। यदि ज्ञानी आत्माएं भी उसी तरह कर्म करें जैसे कलियुगी मनुष्य करते हैं, यदि वे भी मनुष्यों की तरह ही व्यवहार करें, यदि वे भी जीवन यात्रा में मनुष्यों की तरह ही सफर करें तो उनके ज्ञानीपन का लक्षण ही क्या। ईश्वर ने आकर कर्म करने का अलौकिक ज्ञान दिया, कर्म करने का ऐसा ज्ञान दिया जिससे आत्मा कर्म बन्धन से ही मुक्त हो जाए। व्यवहार का ऐसा ज्ञान दिया जिससे मनुष्य देव-सम प्रतीत हो। विश्व में विचरण करने का ऐसा ज्ञान दिया जिससे देखने वालों को लगे कि ये हमसे भिन्न हैं, वे इस संसार में विचरण करते हुए भी मानो यहाँ नहीं हैं।

प्रस्तुत चर्चा में ब्रह्मा बाबा के आदर्शों को सम्मुख रखते हुए हम न्यारेपन और प्यारेपन की अलौकिक स्थिति का विश्लेषण करेंगे। वास्तव में यह क्या है और कैसे ईश्वरीय सेवा में सर्वश्रेष्ठ साधन सिद्ध होती है और हमें अनेक विघ्नों से बचाकर सर्व के सहयोग के पात्र बनाती है।

हम सभी को लौकिक या ईश्वरीय परिवार में रहना होता है, सभी को कोई न कोई जिम्मेदारी भी सम्भालनी होती है। सभी को दूसरों के सम्पर्क व सम्बन्ध में भी आना होता है। परन्तु न्यारापन हमें मोहग्रस्त होने से बचाता है, न्यारापन हमें दूसरों के प्रभाव से बचाता है। अन्यथा यह बात स्वाभाविक सी हो गई है कि प्रत्येक मनुष्य सारा ही समय किसी न किसी प्रभाव में, व्यक्ति व वस्तु के प्रभाव के अधीन होकर ही चलता है, उसका मन सदा ही किसी प्रभाव से बन्धा रहता है जबकि न्यारेपन का अभ्यासी स्वयं के स्वेच्छिक विचारों का आनंद ले सकता है।

ऐसे न्यारेपन के लिए सर्वप्रथम स्वयं के देह से न्यारेपन की वृत्ति धारण करनी होगी। यही न्यारापन हमें कर्म में न्यारेपन का अनुभव करायेगा। दूसरी बात–बुद्धि में केवल अपना सम्पूर्ण लक्ष्य ही दृढ़तापूर्वक समाया हो। जैसे एक मेधावी विद्यार्थी को विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान पाने का लक्ष्य इतना दृढ़ रहता है कि उसके मन का खिंचाव, अनेक आकर्षण होते हुए भी उनकी ओर नहीं जाता। इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जिन विद्यार्थियों को सम्पूर्णता प्राप्त करने का लक्ष्य जितना दृढ़ होगा, उतने ही वे संसार की चकाचौंध से निर्लिप्त रहते हैं।

न्यारापन सूखापन नहीं है

कई पुरुषार्थी न्यारेपन को जीवन में सूखापन समझने की भूल करते हैं। फलस्वरूप परिवार से, जिम्मेदारियों से या सेवाओं से किनारा करने लगते हैं। यह गलत है तथा मार्ग में कठिनाई पैदा करने वाला, व ईश्वरीय ज्ञान को बदनाम करने वाला है। ऐसी प्रवृत्ति से रुष्ट होकर परिवारजन मार्ग में बाधा उत्पन्न करने लगते हैं। किनारा करना है व्यर्थ बातों से व व्यर्थ संग से। न्यारेपन का यह अर्थ नहीं है कि हम अपने परिवारजन या बच्चों से प्यार न करें, उन्हें प्यार की अनुभूति न करायें। प्यार सभी से हो, परन्तु बुद्धियोग एक ही परमपिता से हो। यही है यथार्थ अर्थ में न्यारापन। यह न्यारापन हमें सबका प्यारा बनाता है, कोई भी हमसे नफरत नहीं करेगा, कोई भी दुर्व्यवहार नहीं करेगा।

ब्रह्मा बाबा का न्यारापन

वे ज्यों-ज्यों अपनी सम्पूर्ण स्थिति के समीप होते गये, उन्होंने सबसे महान त्याग किया परन्तु त्याग के बाद वे उससे इतने न्यारे हो गये कि उन्होंने कभी पैसा देखा भी नहीं, उन्हें वास्तव में तो अपने त्याग की भी अविद्या हो गई। वे कहा करते थे कि–"बच्चे, बाबा ने क्या छोड़ा पत्थर ही तो छोड़े, परन्तु बदले में तो ज्ञान-रत्न मिले।" जबकि आजकल लोग थोड़ा सा त्याग करके या धन की सेवा करके उसके अहं में रहते हैं और उसका फल मान-शान के रूप में साथ-साथ ही चाहते हैं जिस कारण उन्हें उनके त्याग का बल प्राप्त नहीं होता।

बाबा ने हम सबके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। ईश्वरीय ज्ञान के बल से और सर्वशक्तिवान के बल पर स्थिर वे आदि पुरुष बेगरी पार्ट के लम्बे समय में भी अविचलित रहे। भय और चिन्ता उन्हें छू नहीं पाई। ३५० भाई-बहनों की पालना और भण्डारे समाप्त...कल्पना करें, एक आम आदमी तो मैदान छोड़ भागे। परन्तु बाबा के चेहरे पर वही न्यारापन, वही निश्चिन्तता व वही अडोलता थी।

वे इतने बड़े ईश्वरीय परिवार के पिता होते हुए तथा सभी बच्चों को सम्पूर्ण प्यार देते हुए भी न्यारे रहे। क्योंकि वे तो सतत् एक परम प्रियतम के प्यार में डूबे रहते थे। मनुष्यों से प्यार की कामना न्यारेपन से दूर ले चलती है और प्यार के दातापन की भावना हमें प्यार बाँटते हुए भी न्यारेपन की श्रेष्ठ अनुभूति में रखती है।

ब्रह्मा बाबा पर सम्पूर्ण यज्ञ की, विश्व परिवर्तन की व हज़ारों बच्चों के जीवन की पूरी जिम्मेदारी थी। वे रात-दिन ईश्वरीय सेवा में, आत्माओं की समस्या हल करने में और अ-नेकों की पालना करने में व्यस्त रहते थे। परन्तु सदा ही बाबा को निश्चिन्त देखा गया, सदा ही उन्हें सरलचित्त पाया गया– यह उनकी न्यारेपन की स्थिति के कारण ही था। आज एक छोटे से परिवार को सम्भालने वाले व्यक्ति का मन परेशान रहता है, उनका मन बोझिल व चिन्ताग्रस्त रहता है, क्योंकि उसने न्यारा रहना नहीं सीखा है।

बाबा, ईश्वरीय सेवा समाचार सुनते हुए, बातचीत करते हुए भी बहुत न्यारे रहते थे। उनका न्यारापन अन्त में इतनी सूक्ष्मता तक पहुंच चुका था कि जो भी उनके समीप जाता था, वह एक सुखद सन्नाटे का अनुभव करता था। सभी देखने वालों को यह अनुभव होता था कि बाबा सुनते हुए व देखते हुए भी यहां नहीं हैं।

अन्तिम दिनों में बाबा अति गहन शान्ति के अनुभव में रहने लगे थे। यहाँ तक कि उन्होंने अपने कमरे में लगी घड़ी की टिकटिक को भी बन्द करा दिया था। कई बच्चे प्रात: काल बाबा को गुडमॉर्निंग करने जाते थे, परन्तु उन दिनों बाबा ने कहा– बच्चे प्यार से गुडमॉर्निंग करने आते हैं तो बच्चों को मान देने के लिए बाबा को अशरीरीपन की मीठी स्थिति से नीचे उतर कर गुडमॉर्निंग करना पड़ता है और बाबा फिर अशरीरी हो जाते हैं। परन्तु उस समय बाबा को आवाज़ में आना अच्छा नहीं लगता।

बाबा ने हम सबके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया। ईश्वरीय ज्ञान के बल से और सर्व शक्तिवान के बल पर स्थिर वे आदि पुरुष बेगरी पार्ट के लम्बे समय में भी अविचलित रहे। भय और चिन्ता उन्हें छू नहीं पाई। 350 भाई-बहनों की पालना और भण्डारे समाप्त...कल्पना करें, एक आम आदमी तो मैदान छोड़ भागे। परन्तु बाबा के चेहरे पर वही न्यारापन, वही निश्चिन्तता व वही अडोलता थी।

निमित्त भाव से न्यारापन

प्राय: देखा जाता है कि कोई भी जिम्मेदारी या अधिकार मिलने पर मनुष्य अपने न्यारेपन के लक्ष्य को भूल कर उसका स्वरूप बन जाता है। वह यह भूल जाता है कि यह कार्य तो करन-करावनहार परमपिता का है, उसने मुझे निमित्त बनाया है। वह यह निमित्तभाव भूलकर मैं-पन की दीवारों में अटक जाता है। फलस्वरूप संगम युग के सुखों के क्षणों को बोझिल क्षणों के रूप में अनुभव करता है।

परन्तु चाहे हम ईश्वरीय सेवा के जिम्मेदार हों या परिवार के संरक्षक, हमें स्वयं को निमित्त ही समझना चाहिए। असली संरक्षक, शक्तिदाता तो सर्वशक्तिवान है। बच्चे तो सब उसके हैं, कार्य तो उसका है, हमें तो मात्र इसे सम्पन्न करना है व इसको आधार बनाकर सर्वशक्तियाँ प्राप्त करनी हैं। परन्तु यदि हम इन कार्यों में ही अटक गये तो कार्य तो हमारे साथ नहीं जाएगा और अन्त में हम स्वयं को खाली व अकेला महसूस करेंगे। तो आओ हम सभी आत्माएँ इस स्मृति दिवस पर "न्यारे व प्यारे" के सन्तुलन रखने का संकल्प करें।

कर्म करते हुए भी न्यारे

कहावत है– 'नेकी कर दरिया में डाल'। तो कर्म करो, सहयोग दो, सहयोग लो और न्यारे हो जाओ। आत्माओं के साथ व्यवहार में आओ और न्यारे हो जाओ। यही हमारी अन्तिम सर्वश्रेष्ठ स्थिति है जो हमें कर्मातीत स्थिति की ओर ले चलती है।

पेज 10 पर शेष

नवरंगपुर। असिस्टेंट कमान्डेंट गणेश कुमार को ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.नमिता साथ में ब्र.कु.राक्षी।

निलंगा-महा.। राजयोग शिविर का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्षा सुनिता चोपणे, वामनराव पाटील,अध्यक्ष शिवाजी विद्यालय, पंडितराव धुमाल,तहसीलदार, नामदेव टिकेकर,पत्रकार संगठन अध्यक्ष, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.महानंदा, ब्र.कु.छाया, ब्र.कु.सुलक्षणा, गोविंद इंगले तथा अन्य।

पटौदी। आध्यात्मिक कार्यक्रम के अन्तर्गत ई.टी.ओ. एन.के.गुप्ता को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.संतोष।

राजिम। थाना प्रभारी सुभाष दास को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.हेमा।

राजकोट। स्नेह मिलन कार्यक्रम पर दीप प्रज्वलित करते हुए मेयर रक्षा बहन, शिशु बाल कल्याण समिति की चेयरमेन लीना बहन, ब्र.कु.भगवती तथा अन्य।

शिवनी-म.प्र.। स्नेह मिलन कार्यक्रम में पधारे महामण्डलेश्वर मठाधीश बलवंतानंदजी महाराज एवं उनके साथी को ईश्वरीय संदेश देकर प्रभु प्रसाद देते हुए ब्र.कु.दत्तात्रय। साथ हैं ब्र.कु.गायत्री।